

गणेशाय नमः

सुमनसा नथा सुखा ॥

विद्या कृपाय नमः ॥
निवृत्तिं चैव शोचति ॥

पुनश्च त्रीशमि निवृत्तिं हृदि नि

यिना शरणा गानि नृकलः

द्विजमासीत् ॥

॥ गान्धर्व ॥ नमः कृष्णाय ॥

मन्त्रं कृत्वा ॥

2864

नमः कृष्णाय

८ धवनसुसंस्थितयदहधनरसचुधिसुखउमान
 २गनागनहं॥धवनसुसंस्थितयदहधनरसाजयसाहंयकात्रमन
 व॥५२॥इदश्रात्रिगणकागधनरवजय॥समूहानेमनव॥५३॥
 मायाश्रावतुनीनका॥गो१॥सहि॥यवजसुखयनमेधन॥५४॥
 ॥५५॥नागमधुमन॥पिचकनविमसिमधुनमाज्यासिगिगान
 उमनमिधन॥१॥वजवाताहि॥श्रात्रिगणसमूहननानानसनिस्मनद
 कना१गनाहं१गनाहं१गनागनहं१हंका॥निनवर्गवकुवक
 पतिमुखशिन्यन॥पनमाश्राननुमनमिधन॥१॥विषवक

308.51.1-2

2864

ASHLEY HIVES

वसुजगामकृत्तधन॥ हादश्रातत्रनसु॥ भागिता॥ ॥ वसुज
०० गजवर्मदेमनूखलोगधः विनमाश्राननुमूत्रुगिधनाश्क
नगिकपात्रस्वपत्रसूपासधवशुगिसुत्रवध्रसित्रधना॥ ॥
दिगाविदिगकाकासादिगचर्मदादिप्रातः सहजाश्राननुमू
त्रुगिधनाश्नमामिस्थीचक्रसम्भनः सकगुत्रवसनश्रानाधिय
त्र॥ ॥ ॥ रागामधुमग॥ नमामिस्थीचक्रसम्भनः सकगुत्रवसनश्रानाधिय
नदाकिनिपत्रमध्वना॥ इतिनरुनलश्रानधवत्रुदहोः श्रानपा
किनिश्रानिगना॥ गनाहृहृगनाहृहृहृ॥ ददिनरुनलश्रानधवत्रुदहोः श्रानपा

10

श्री गणेशाय नमः

॥ १ ॥
॥ २ ॥
॥ ३ ॥
॥ ४ ॥
॥ ५ ॥
॥ ६ ॥
॥ ७ ॥
॥ ८ ॥
॥ ९ ॥
॥ १० ॥

नृधनः कुरुगुरु कुरुधनं वज्रय ॥ किञ्चन नृधनं सुखं ॥
सिगकाधसिगमना ॥ ५ ॥ पदमवक पदमाधवरा ॥ द्वागोपाव
सुपहृ गियनोपद ॥ सुवतु सुवतु सुवतु वस्तुनः मानय सुवज्रगगडध
नना ॥ ५ ॥ विविधिमो नवत विद्यन विनासना ॥ आदिमिहिवनः
सायकं रजानमज नमकन पापरवकनः ॥ आदिवृद्धनमधनं ॥ ५ ॥
॥ ५ ॥ नागकज्ञान ॥ श्रुवनिनीदिनवामः ॥ जानुन सर्वरवमकिन
नाः मानसं गा सा रताग धधमा हवतु गप ॥ ५ ॥ गिरुवेननायाः
वन्नविना ॥ ० ॥ नमामिथा दनु नकागारवनः ॥ जानुनमः ॥ निदे

॥ १ ॥
॥ २ ॥
॥ ३ ॥
॥ ४ ॥
॥ ५ ॥
॥ ६ ॥
॥ ७ ॥
॥ ८ ॥
॥ ९ ॥
॥ १० ॥

॥ १ ॥
॥ २ ॥
॥ ३ ॥
॥ ४ ॥
॥ ५ ॥
॥ ६ ॥
॥ ७ ॥
॥ ८ ॥
॥ ९ ॥
॥ १० ॥

दिना शविष्ठनाथविष्ठव्यापिक ॥ विनदिष्ठ नमिहकाधनायाः
ज्ञान ॥ ५ ॥ ५ ॥ श्रुतिरिखनागमः ॥ उर्गयवत्याः दहकनायाः
दिगकिनना ॥ पिदिगमः ॥ नाक कननयनाः ॥ वेनिमंगासा नाख
सत्रना ॥ ५ ॥ माधवमायाः ॥ यत्रं डनवका नूडाय साव पोदवरा
नेना रसमनसमायाः ॥ नागविमोहाः ॥ सुननागसंमादिनदहा ॥ ५ ॥
नत्वाहनेना पुकनिगमोत्रिः ॥ कयुनना पूवतूनरु नकाना ॥ सुनन
ननागा ॥ वादि कवदनाः ॥ नाकसुन नवश्रुवाविना ॥ ५ ॥ ५ ॥
॥ नागकज्ञान ॥ नागकज्ञान पुकनिगकिनन ॥ उर्गयवत्याः दहकनायाः

॥ १ ॥
॥ २ ॥
॥ ३ ॥
॥ ४ ॥
॥ ५ ॥
॥ ६ ॥
॥ ७ ॥
॥ ८ ॥
॥ ९ ॥
॥ १० ॥

हव्यताया॥ ५५ ॥ अगमविवाहिनववत्ररुसदाता॥ अगममाक
 कात्रिः॥ श्रीनेसात्मादवी॥ नितवर्धुदविकर्त्तियानधना॥ ५६ ॥
 काठवित्रदिगश्रुतिगनसमाधिषादसहृङ्गकसागकधत्रिआ
 ॥ ५७ ॥ हस्मविरुत्वीगखदमूडाहृननः॥ वार्धचर्मपसिगन
 तसिनमात्रा॥ ५८ ॥ उक्तामहृषत्रनानायात्रन॥ ५९ ॥ चापयिच
 उचासनचरुमात्रमदन॥ ६० ॥ ५९ ॥ **नागकद्र** ॥ वक्रडागिनी
 हृत्रवत्राया॥ शिखरवननाथदहिमघाना॥ ६१ ॥ प्रिवयिसमहा
 तसमहासुषकत्रियाः॥ वक्रदविरुत्रियाः॥ त्रनरुन॥ ६२ ॥ उह

केशजागिनि

नरसमधिग

नात्रिदिदत्रकमत्रसंजा॥ गददहि विनास्ययवनसंरुदयि॥ ६३ ॥
 उक्रयित्रपश्चमहाखकत्रिया॥ २पश्च॥ श्रीनसविश्ववात्रनि॥ ६४ ॥
 सागरुत्रय॥ दयगु॥ थीरिखाक॥ २पात्राधत्रीसंसात्रसमूडा॥ ६५ ॥
 ॥ ६६ ॥ **नागकद्र** ॥ हंकात्रसरवः॥ कत्रयानत्रमिगुसमा॥ स्त्रिन्धयिगत्र
 कथाचन्द्रनाखन॥ हवत्यहृनधीथीद्वखवर्जिनी॥ ६७ ॥ कानावि
 हलिगः॥ श्रियासधत्रियाः॥ शिखरवनवर्द्धिगशीचन्द्रनाखन॥ ६८ ॥
 यत्रवंसंकात्रसंखवमधः॥ सहृषहृमात्रस्मिसमताहिना॥ ६९ ॥ विचिं
 चिथापनिः॥ सकत्रसचियनि॥ २२॥ गवर्द्धिगचन॥ गदार्कग॥ ७० ॥

रंकात्रसंखव॥ २३

॥ कनकचन्दनं नवः श्रुतिगमधे
महाभागविशुद्धिमहाभायाकाशि ॥ ॥ नत्तमदमिनमिप्रम

आश्रममात्रं च दाक्या किनीहय कृष्टसमस्वाभाः ॥ इदं वनिः
गङ्गाहयना ॥ समयाश्रममात्रं सिद्धिः ॥ सत्त्वसंकल्पयदविः

ॐ ॥ ह्यद न्यायन कि यात्रि त्रसम्बन्धः धर्माधिकवात्रि नर साशु सु
 वात्र न मनु यः ४ स्पष्टानः मकु र के सिदिगम्य ना ॥ नत्र मात्र त्रसम्बन्ध न
 याः सहज सुत्र विमात्र को ना श्रुत विनाहि नः वज्र वा नाहिः रु या
 महि न मात्र को ना श्रुत विनाहि नः यन ४ वत्र सुह मय नः कयू नर
 नयि म वा ना श्रुत गगन नि ना वलुः वलु न को नाः मत्र मधु नर व
 सी ना ॥ ५ ॥ नि यं धन स्वागं (गः) ॥ ६ ॥ दि ग्य त्र सन्ध नः ययि मयि
 नर व गा ना श्रुत मवि नाहि नः वज्र वा नाहिः ॥ ७ ॥ क्व वि नः ययि मयि

॥ ५५ ॥ गमवर्गसिखावर्गद्वयोश्चियाश्चात्रिंशत्सुः सप्तसुत्रवर्गः ॥
 ॥ ५६ ॥ समयाश्चानन्दः रुद्रिणपत्रामसुतः सप्तवर्गवात्राहि ॥ ५७ ॥
 ॥ ५८ ॥ नागराणां ॥ ५९ ॥ चकि कलुषकमिनाक्रमवर्गः खिगः ॥ ६० ॥
 ॥ ६१ ॥ नृपुत्रनत्रमिमात्रा ॥ ६२ ॥ नवकुचकिने ॥ ६३ ॥ आरुस्मविह्वलिगः ॥ ६४ ॥
 ॥ ६५ ॥ त्रिवर्गत्रियात्राः ॥ ६६ ॥ त्रुसगिह्वत्रुवः ॥ ६७ ॥ दहमानकात्राः ॥ ६८ ॥
 ॥ ६९ ॥ उमात्रा ॥ ७० ॥ वडककत्रागकहाथाधोत्रियाः ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ थिबह्वल्वत्तांगप ॥ ७३ ॥
 ॥ ७४ ॥ जागिनीकमयविह्वलिगः ॥ ७५ ॥ मलसुखमत्रियसां ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ वडकवात्रा
 ॥ ७८ ॥ हि ॥ ७९ ॥ त्रिगमवर्गः ॥ ८० ॥ नाचयिवह्वविह्वल्वत्तांग ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ वडकवात्रा

卷之四

[illegible]

गिति समस्त संता व॥ ५२ ॥ ५३ ॥ आना गते वि॥ श्रीराम
दिगं विदिगं शुभ नः धर्मिन मान गुन ग न्य २ ग ग न्यि ख न न
ग ग स न स न का नाः ग ग न दाम न व ज ख ४ व डि या न ॥ इ ह न
मामि यं च २ आ हा कि नि प च ह मा थिः ग न द कि नी स न ह ग प त
॥ ॥ पूर्व उ म न प धि म द कि नः च रु क व नः वि प न मा नाः वि
घ न ख डि या न २ व रु द कि नीः घ न च मा न आ कि निः व रु ज
न द किः हि नाः व रु न द वि॥ ॥ सि पि नि व्या धि नि रु व क उ न
कि निः स न ग प न शु श्रू क स ह ह २ द कि नि दि पी नी द

五

नमो भगवते वासुदेवाय ॥

कं वा जनिः घानदा मनूवज्जकां सवदनि ॥ ॐ ॥ नमो भगवते
विदा कि निगु रु पयि स ननः पञ्च मूडा त्रु ष नी या श्रु
मं ह ग क व ज घ ७७ ख त्या ग पा ण पु न मा मि दे वी षी हान द वि ॥
॥ ॐ ॥ ॐ ॥ **नागहोत्रवि** ॥ न मा मि र्जि न ध गु क र्ने न कः न
कु न मू न नि श्रा त्रिं गी गा ॥ पञ्च ध गु क र्पः वृ ष्ठ ध म्मे श्रा न य र
ना ॥ न मा मि र्जि ष्ठा ष्म नि पु न स्र तः त्रि द्वि सि द्वि व न दा य नि र्
वि न ४ न त्व स र्व पा प क य क नः दान पु न्य य ह मा कृ प द ना ॥ ॐ ॥
॥ ॐ ॥ **नाग** ॥ न मा मि र्ध म्मे ध गु वा षी ष्य नः खो द स्र दान ग न

नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सि ना श्र खो द स गा न न न न न का नाः स र्व दि व प नि मा ॥ ॐ ॥
गाः न रु रु रु रु ना चि गाः न रु रु रु रु ना ना ॥ न मा मि र्वा न स्र त म रु
नः प र्म गि नि धि नि वा सि गा र स त्व वि मा हि न रु ख वि ने स न
प न मा मि जि न च क स्र ना ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ **नागहोत्रवि** ॥ ग ड ना
न रु ष्ठ हा थ ध नि याः क म न क ति स श्रू क वा ना र द म नू क न गि क
ह्या न गि शु नाः वा म ख त्या र्ग क पा ना ॥ श्री स न्न नो द य वा च नि न
कृ ज्ञा न्च ना न्न न र मा न यि तः चा प यि या त्रि न मा या स ह ज स्व
व गा ना यि ना ॥ पा सु त्र कृ मू डाः वा द स्र हा थः धा वि या र न ना ह

॥ स एष सत्त्वः ॥ स एष सत्त्वः ॥ पूर्वकं कृत्वा ॥ पुच्छि यामः
गान ननु लः गान चक्र मूक मं मत्रापक रं यामि नो ॥ ३० ॥ गान मः
॥ ३१ ॥ त्वान पाने वद मृग हा जनः ॥ पत्रि फ द सा हि वि मूक मं ॥ शि धा रु दे
धु स्ति ग सर्व सत्त्वः ॥ नम रुषः ॥ पुष्ट धूः ॥ यगु ड ना क ना ना ध ॥ ३२ ॥ स
न क सं ॥ त्वं चक्र पुन पानि क यगः ॥ नव धा रु व क रं नि वृ ह यानि ॥ ज
॥ ३३ ॥ रु व मा क ता नः ॥ ना स्या म ना रु ना रं या वे नः ॥ मो त्य गो रं
नि लं च वा य वः ॥ पुष्ट हू ग श्व वि रं ॥ श्री हू न ना स नः ॥ न नः
पा दि यः ॥ वरु उ प रु नः ॥ न स म य प ना क स नः ॥ ३४ ॥ श्री वः

गः महासुखं त्वं संसात्रदुःखं पत्रिमर्कं हृद्यं नृपं
यवत्रयं नैव घट्यः चकनमा मिस्रे सा ह्रिने मसु
जिनवत्रचकनाथाय कनमस्तु ॥ श्रीगणेशाय नमः
नस्तु ॥ श्रीचक्रसंघचक्रनाथाय कनमस्तु ॥ वज्रवाजादिचक्रना
यके ॥ नमस्तु जाकिनिनामिकाय नमो नमः ४ त्रयि लोखन्यना
कः शिवकविनासक वित्रनिगः काकास्यानाद्यदिगपात्रकषु वि
प्रथमी वित्रगनं नमो मिहं ॥ निस्पष्टमूर्कं सहतः उपपिथः पा
पिथः च न्योपचुड्याः मत्रायक २ उपसमस्वानकवाः पवित्रवस्त्रा
कणापत्रा १

मूनिहिवसंघाः वृद्धं च धर्मं च संघचक्रनाथ नमस्तु गणेश
कायवसुगो ॥ मत्राकिहकलाकगुत्र ४ सचक्रिनः विहा २ जगता
विमूर्कं यः दिनासायनमः कसुमभुजं नमस्तु गणेशचक्रमू
कमो ॥ संपूर्णं सचक्रजगता ४ मत्रादेयपुदः सचक्रनादिना
पुत्रासर्वकल्पमहागनं जाकिनीहृत्कादिनायकपवित्रवसुग
॥ जिनगुनहानदयमाकपुदः गणावाशीरुपाकाः सहस्रान
हंप्रससया वात्रवासत्रयकः मोस्य हृदुहः सहस्र
वायचक्रः पवित्रवसुगः जिनगुनहानदयमाकपुदः

यमयागनामकः सा सत्रद्वं नादिगा सा ह्यपससाः चत्राय व
वः प्राप्तागिना ऊर्ध्वं यमगचक्रमाथागुलागुलं ॥ १ ॥
॥ वागागादगि ॥ द्वं विसत्रवनः विसासयिकुं ॥ २ ॥ उर्थरादमः
गुलः नायागुगा ॥ ३ ॥ ॥ उरुगगनि वासियागा ॥ अमिय अमिया
४ मत्रगत्रविनासयि २ सहजसुन्दनि ज्ञेयाजिनहनः ॥ ५ ॥ यिसैयिना
चयि ॥ ६ ॥ ॥ उचवृजागिनि ॥ ७ ॥ कनमना २ वज्रवागाहि अत्रिग
नः कात्रयिनाचयि ॥ ८ ॥ ॥ उर्थरागागा कनूय कवावि २ ॥ ९ ॥
अत्रिगनानिनावर्गः वाजयिनाचयि ॥ १० ॥ ॥ उर्थरागागा ४ ॥

सम्बन्धवद्वा नाहि त्रानि गनः निवासि यात्रा ॥ ५० ॥
 नागमधुमना गात्रमय ॥ वज्रमय कुमिवि शुद्धि यमनुत्तमः मेदनि
 वज्रि एवः वज्रवन्धुर्हं सप्ततमागत्ररु मिनि वासयः मात्रस्यत्रहं
 शासकत्रा ॥ सुम्हनि २ हं रुद्रगुप्ते २ हं रुद्रगुप्तापेय २ हं रुद्रना ॥ श्री
 नयहं रागवनविशानाजहं रुद्र रुद्रदय २ श्रीलिकुदय ॥ ५१ ॥
 गकत्राजियचिगिगउ च्छियः वज्रपाकात्रहं २ श्रीदिगमानप
 नायगत्रवधनः सर्वविघ्नकृत्स्वनुसाह ॥ ५२ ॥ गगननित्रावध
 यकुलिस्तहिनासयः वज्रविमानहं २ वज्रपञ्जहं पंहुं २ हं गगनि

५३१० पृष्ठिकां ४

वसुत्रज्ञात्रज्ञां संज्ञां॥ ५२ ॥ कृदन्तिमगुलनायगुदीत्रश्वनः
सत्वाहियापमादले २ सगगुन आह्लाभिप्रयोगधनित्याः सत्रथिनि
नासर्वज्ञकुमिथुहिने॥ ५३ ॥ ५४ ॥ नागदेववि॥ ५५ ॥ पूर्वज्ञ
त्रयमात्रकत्रः रुत्रयिभूतनत्रकोटत्र २ मात्रयिः ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

पञ्चमहात्रः॥ पर्मांककत्रः॥ रुद्रयि शूनक नकुटादत्र २ मानयि वनू
 दि सगन पत्रिवात्राः॥ नासमात्रात्रिवृन्दत्रा॥ ५२ ॥ नाग॥ उक्तद्विवात्रः॥
 विष्णोक्तकत्रः॥ रुद्रयि शूनक नकुटादत्र २ मानयि यक्तादिसगन पत्रिप
 त्रिवात्राः॥ नासयमात्रात्रिवृन्दत्रा॥ ५३ ॥ नाग॥ ल्बुषानकने शूनक
 वीत्राः॥ रुद्रयि शूनक नकुटादत्रः॥ मानयि लिस्त्रादिसगन पत्रिवात्रा
 ॥ नासयमात्रात्रिवृन्दत्रा॥ ५४ ॥ नाग॥ शूनकनेः॥ गकिनाऊवीत्राः॥
 रुद्रयि शूनक नकुटादत्र २ मानयि शूननादिसगन पत्रिवात्राः॥ ना
 सयमात्रात्रिवृन्दत्रा॥ ५५ ॥ नाग॥ निशग्यकोऽथानि वददवीत्राः॥ रुद्र

यि नून न कोट न २ मा न यि न क सा दि स ग द ५ न वा न
 स य मा न त्रि वृ त्त न ॥ **५२** ॥ रा ग ॥ वा य व क न म क व न नी रा ॥ द
 न यि नून न कोट न २ मा न यि पु व नो दि स ग न प लि वा न ॥ न
 स य मा न त्रि वृ त्त न ॥ **५३** ॥ रा ग ॥ उ छे द न ॥ उ धी ख च क न ॥ रु
 न यि नून न कोट न २ मा न यि व क सा दि स ग न प लि वा न ॥ न
 मा न त्रि वृ त्त न ॥ **५४** ॥ रा ग ॥ मू र धा न ॥ सु म्भ ना ड वी न ॥ रु
 न यि नून न कोट न २ मा न यि म ग सा दि स ग न प लि वा न ॥ न
 न स य मा न त्रि वृ त्त न ॥ **५५** ॥ रा ग ॥ द ह दि ग द स ह का न न ॥ पु न

मा मि द न कोट न २ मा सा य न दान पु मि न ॥ मा न वि प न नि न ॥
 वा नून ॥ **५६** ॥ रा ग ॥ धा व ड स त्व मा न धि या न ॥ नून न सि धि
 मा न य दाना ॥ **५७** ॥ **५८** ॥ रा ग न रा ग ॥ मा न म य ॥ व म्भ व व संध
 न ॥ पी न व र्ण उ क म्भ वि वि दि ग रा न न रु ख नी या र क न क रु ड द
 ट वा म क न धा नि ॥ द हि न म्भ स य म्भ सा र ण नां व न ॥ उ व डि व
 ह म्भ ८ न नां ग न ॥ उ व डी र व ह ट मि ह म द नि २ उं म द नि व डी
 र व ह ॥ व ड व म्भ ॥ वि ष्य क न न स य न ॥ वि ष्य न र व लु ॥ **५९** ॥
 उ ह दि मा ग नि ॥ द म य पु जा ॥ म्भ ॥ नि व ड स त्व पु डि

न लि ॥ य म ॥ द न ॥ १ व म्भ व न

न लि ॥ य म ॥ द न ॥ १ व म्भ व न

॥ ५२ ॥ २ मगुत्रकर्मः सुसाधय २ डिं को हं हं स्वाहा ॥ ॥ नो मिष्टासः
धनद्वित्रिगपागाने वन्दः विविधिवि उपेक्षनः पूजयामि श्रुत्या साकार
हमनिमानववर्गजनः द विधीवसं धनामगुलनकापि ॥ ॥
सगगुत्रचननकमत्रिगगधसियो २ गभवनि आचार्यसंघसा २
कुमि (आधनविविधिरस्य रुनदः सर्वसुखदिया संसात्रगन (आ
॥ ॥ ५३ ॥ **नागसेत्रविष्णुनाम** निम्नानां वृजमध्वगगकनसाः
पंचामगनस पुनिगा २ वि धर्मयगविषय पञ्चपववाः नीनवधूत्र
जसिन्नसिधापिया ॥ ॥ ५४ ॥ कनहवजोनाथो मल्ल वित्तामिताः

॥ ५५ ॥ कर्मवज्री सहीगनपञ्चास्त्रत्रयि ॥ ॥ वज्रास्तकामगनिपुर्
रुनुनाः रावसमूडासत्रनशि मनेभा ॥ ॥ पूर्वदेवगग पञ्च
गुसत्रजिगा पंचविस्मिगि रुदिगवृधकाय २ दकिनदत्रगगवः
ऊखसमसमत्रपं गिरुवनसमत्रस (आपायविस्मिहि ॥ ॥
पश्चिमदत्रगगगर्भस्व (आधिता धवनवधूदिगा ऊना २ उरुनिदत्र
गतच ७४ घोरवनादिगा हूनस्त्रयिनी विष्व जननि ॥ ॥ श्री
ग्यादिदत्रगग (अधगापिगा नृणां मवर्गत्रजथापियात्रा पृष्ठादि
न्यासिगा विधर्मयपूजिगा पुनमामिवजसुखसिन्नसाधिता ॥

नमो भगवते वासुदेवाय

त्रावन्मन्त्रान्कलाहलवदमूर्खश्च समन्तमहासूक्तवादि ॥
दि ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ ध्यायेत् ॥ विष्णुं संहृज्य
मन्त्रं गगनसमन्तं ॥ ५५ ॥ ॥ ॥ ॥ धनंति ॥ वसिष्ठवा ॥ ह
हं हं ॥ चक्रि केशुत्र ॥ समया चक्रस्य ॥ मधिगयमात्र ॥ ॥ ॥
किं च ॥
दिशुन्या ॥ मन्त्रं गगन ॥ नमो भगवते ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
नादि ॥ मन्त्रं गगन ॥ धनं मन्त्रं ॥ मन्त्रं मन्त्रं ॥ धनं ॥ दि
गम्यता योय ॥

यह स्मरान् ॥ दविष्णुं ज्ञायनि हं सा सनी ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सपुनिकुमात्रा विष्णुं कृष्णपात्रयक यकनी ॥ यद्विष्णुं मम मन्त्रं
सिवसिन्धुविना ॥ ४ ॥ सधिकागिनिमात्रिगना ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
हस्मस्वाने ॥ ५ ॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
ज्ञात्रा कुजस्मस्वाने ॥ ७ ॥
दिगमं च न ॥ ८ ॥
मन्त्रं गगन ॥ ९ ॥

॥ नेत्राय को॥ मल्लिकार्जुन स्मृतान्दवी वयुर्वी मज्जु ज मनि॥
 ॥ वायुव को॥ धर्मिकन स्मृतान्दवी चामुन पुगो सनी॥ ५२ ॥
 ॥ ॐ धान को॥ लुट्टहा समने द विमहा समि सिंहा सनी॥ ५३ ॥
 ॥ ५४ ॥ धन॥ द वयुजा॥ गिगादि॥ धूप च वा ५४ ॥ वसि च वाः
 ५५ ॥ किमं क॥ गु द किना॥ ५६ ॥ धुनि कि किना रुत॥ ५७ ॥ धन॥
 ५८ ॥ धिया सन दन क॥ ५९ ॥ ध्यानी व वा कि या॥ गुत्र मनु॥ गिस माधि
 ॥ जाय धूप पिना स्थान वा य द व द वी स्व न य न गो ग क मा प न॥
 ॥ नागाने त्रि॥ माने षट् कं गा न॥ च ल य रु स्म स्थाने सिन म र क

॥ ५८ ॥ ध्यानी व वा कि या॥ गुत्र मनु॥ गिस माधि
 ॥ जाय धूप पिना स्थान वा य द व द वी स्व न य न गो ग क मा प न॥
 ॥ नागाने त्रि॥ माने षट् कं गा न॥ च ल य रु स्म स्थाने सिन म र क
 ॥ ६० ॥ ध्यानी व वा कि या॥ गुत्र मनु॥ गिस माधि
 ॥ जाय धूप पिना स्थान वा य द व द वी स्व न य न गो ग क मा प न॥
 ॥ नागाने त्रि॥ माने षट् कं गा न॥ च ल य रु स्म स्थाने सिन म र क